कः कित्यमान त्यार्थनाव इत्रभाष्यकार्रवात्र प्रमाणम्। एते वस्त्रभं या श्रह्मन यु शकेर् स त्र उपीर वा दार्ध व म त्याता धातारित्या ताच च श्रमं व्यवत्यारिमाध वा दात्त ने भा खाविरा धा कि त्यमा। अतरवनप्रमक्षेत्रीयं ज्ञान विदि निक्रीयायित्र प्यात्रयणा भूतमे वसमे जसमे उन्का माध्यानुरोधेन प्राचेरात्रा नचिदितव्या चन्द्रातान्त्र पिष्ठ न्यान्यात्र वायतीत्यादे। सध्यन्त रागा मध्यपदेशसामध्यार्गातंभवि व्यति। इसर्षातिकारे सेवायिकार माञ्चातापविका है यि प्रक्रिया ता घे वसता रण नवे वसव्या पा दे सो नव्या दिति वा व्यस्। ये विधि प्रत्यव देशो। नव र्थकः मिविधि र्वाध्यते।। यत्पत्रिविसन में व ना मार्वाध्य इति त्या यात्॥ गर्गां प्रत्यक्ष्येका रापदेशी। नेपकः जिन्न स्थापिष्ठ पठ लाता। सायादेशस्य निमितमेशाने वे लापि सेव 

में मन्त्राताह्यमहिवनां व्याति स्थाने वातात्रिमाना मर्वनां मर्वनां मर्वनाता प्रविभाग मिह पार्भातिक की जी हमादिहवाहित पतिगालिक के निक्र में हिंदि महा मित्रवाहि।। क्ल माहिटिल देवगताकते प्राप्तिक तिय नामा। चल्ला कृतिना। णं व ताब पाताः।। विमायव ब्रह्मा विश्वाव हिंग हुनी। श्रायत्रीमहितंब्र ह्मापामावाक्यामा आवश्रप्त तेयत्। सन्ती सहितंब हाव स्वात विज्ञायत्रीसहितं हेवेथ विभावाहयात्रवहामा ब्रह्मा ब्रह्मा व्यक्तां हिंबोबेता मावःसिय ब्राइपया मामायाविकः सामायाविकः स्वाद्याः एकाः विक्रि बेगावंपुतारीबान्सं या धवमधु सहसे ॥स्विया ती सारितं हे वं विस्त्रा वार्या या वार्याः वार्याः राज्यातिका स्वाधिका स्वाधिका से विस्तानिकिता वालाता एको । विस्तानिक से विष्तानिक से विस्तानिक से विस्तानिक से विस्तानिक से विस्तानिक से विष्तानिक से विस्तानिक से विस्तानिक से विस्तानिक से विष्तानिक से विस्तानिक से विष्तानिक से

वयमने सावाहने व ततः पाचमा दा तता व ता मार्था ने वेचम्। व वेचम्। व प्रचा जा विशा प्रचा ने वम्। व तत्त्र स्वाव ने वम् वम्। व तत्त्र स्वाव ने वम्। वस्ति वस्ति स्वाव ने ज्योतिः स्याः सुक्यां ज्योतिः स्याः स्यात् हावन्। स्वितः स्याप्तः स्रोताः स्यातिन सन्ति । स्याप्ताः स्या न्यत्रमानस्य प्रतिन न्येयवारकोशा इतिवार्गियाचित्रात्रियात्। कराराण्यकात् र्वेम्पानम् ।। महोश्रीकाराचि । विश्वास्त्रिकाराचि ।। स्वास्त्रिकाराचि ।। स्वास्त्रिकार में इत्यव जात्र वम्य धानं रहितां व जा भग्रे के मिले । इत्यां व्यव विते । व ची दिति ता यनच नमः।। एतत्पाचित्रमं नम्भा राताना ना राताचिति त्वं हुके महे। स्वापाता त्याप्य ति स्वामहे विसाम सम्मवति द्वातिवार पापतम हो देव प्रवन्ता हो प्रया वा न्त्रतास्य लाइवेइद्यात्। तास्य लहाने संत्रशा आपन्ययोगि यहने पता विविधाति। नामागुणनेल्या नप्यम्सनप्रमुणना भागायान विकारितिम्बान कार्या माना प्रतित्विक्षिण प्रतित्विक्षिण स्थान प्रतित्विक्षिण स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स स्यानम्भन्नमित्र हितास्य सम्भे वर्जनी स्थायह गामन्त्रे तसह न मानिहा महामान्त्र हिल्ला है के लिए के वास्तीत्रीचां सता अप्रया गार्व पृथिति। कहामतेष्रत्ता ती स्वतं हे ति हो। प्रतं भते लेड्यम्।हरावाम्भेस् मवर्त्तार्म् मत्याना निर्वास्त्रात्या माने का स्वास्त्रात्या निमेहे वाय होते साविधे महत्र में ततो आत्य माधा त्यामाना व निहे हे वा न्या ताय वा दा ताय त्या मा श्री वात्रा है जा माने वात्र हो है जो वह साथ ता है द ताय वात्र है पात कर का ता वात्र देशाणित्र नाव ने बेला में तो विवास का माने हैं व में माने ने जी जी जी हैं। हैं। म् त्यो मातः सम्बद्धारा मात्रावियाः वाहा सम्बद्धाः वाहा नियात्रणातिक व्यापात्र व्यापात्र व्यापातिक नियात्र व्यापात्र व्यापातिक नियात्र व्यापातिक नियात्र व्यापातिक नियात्र व्यापात्र व्यापातिक नियात्र व्यापातिक नियात्र व्यापातिक नियात्र व्यापातिक नियात्र व्यापातिक नियात्र व्यापातिक नियात्र व्यापातिक नियात्य व्यापातिक नियात्र व्यापात्र व्यापात्र व्यापात्र व कहवनम संस्पायक हम्माईक केलियवानि नीम अरि: भ

March 3211 desa. (... 1. व्यमने व्यापादनेष ततः प्रथम। या तते विश्व ते ती व्यापाने विश्व प्रमानिक । विश्व के विश्व के विश्व के विश्व के व तत्र विश्व के वि ज्योतिः सच्चः सक्चा ज्योतिः स्वाः स्वाक होवन्। स्वितः साग्रीः सोग्री स्वीता स्वितः सम्बद्धाः अया न्यत्रमानस्य प्रार्तन्न्यकारकाशा इतिक के स्थावित्वात्र यत्र वेद्यात्। कराराण्यकात् र्वेभ्यातम् ।। मत्तारावीका विकास्य विकासिय विक महत्यवजाप्रयमप्रधानग्रहातावजाभग्यन्ममति॥इत्यवा व्यक्तवत्॥ वृत्ताः श्रीताता तिस्व ह्या महे वसाम्यम्मवति द्वातिवारणापतम् । वेश्व वस्त्रात् प्रथा व न्त्रनाम्बुलाईबेइद्यात्। ताम्बलहर्निमंत्रशा आक्स्योजिबहर्ने पंता विवसति। तामोगुगतिला त्या प्रतन्य प्रतिमा भाषामाय ता ॥ विद्याति तारामायन म्यातिकाम राववा का के मिलि मायाने पत्रिते लाय धानाहै। व के मुता महाका मान म्बोहिस् मप्रेम अति छुवरमे हेव नर्ग कार्य व नर्ग ति को ति प्रम्भ व ने प्रम्य के प्रम्य के प्रम्य के प्रम्य के प्रमाय माने जीत हर भारत के विशेष स्थान स्थान के स्थान महाराष्ट्रिया यायसीत्रीच्यां यसम्बप्रधा पार्वपृथ्वित्ता भहायते प्रस्ता ती मुख्य त्व त्वं हमश्यति ते लेड्यम्।हरायात्रभावतिम् वित्वाति हित्तिम् हितिम् हित्तिम् असिहे वाय लेवे साविधे सहस्र में मती आत्य माधा त्या माही व निहे हे वा न्या ताय वा हा ताय ज्यामा रेजाम अप्रतिमाय बेमे था हे वो वश साथ ता है द ताय वादी। है पात कर सा ता लिख देशाणिताव न बेला महाना विशासिका माने हैं व माने ने जी ने जी जी हैं। हैं। म् त्यो मातः सम्बद्धारा मात्रावियाः वाहा त्राम्यात्रामा अवाता यसाहा मातायसाहा अधियाति के त्रात्या वित त्रात्याति के त्याति के त्रात्याति के त्रात्याति के त्रात्याति के त्रात्याति के त कहवनम सम्प्रकार मुमाईक कालि स्वासि नीम अहि: भ

अत्याद्या

उत्तरेत्रीय निर्मान्त्र हो हार मोह महेकारः किः व

रिवंदियाम् स्वाद्त्रामाविदामहेव स्व न्यातिशा द्राम्याद्वाम् व स्वादा प्रवादा हुन ब नात्। प्राणहरात्र । वा त्रतीव्यात्।) मोदितां स्पत्रयमा गरहेब स्पातां व दतात् व स्पातां आयात्।। प्रावतां क्राम्यां स्व स्पातां आयात्।। प्रावतां क्राम्यां स्व स्पातां व स्पात अल्पिबर्गाप्यस्योदेशनं हान्स्याये हानुरिहमेषा समयमेको मेः सम् धनाम प्रमारित्रमत्ना विज्ञास्य निर्वेषु निर्वा प्राचित्र देश ब्राचित्र निर्वेष प्राचित्र प् यम प्रांतियमें कुषवेश्वमा क्वाब्यमें क्वाब्यमा विकास व पान्तेगर्त्र क्लां क्रांक्रिक्त ने वाद्या है क्लां क्लांक्रिक नाभ ना में मत्यामध्य हमका पादिने वेवनाविक वाचोदेवो नमा हमके उड हर न्तन धाता 

हिनेग

**3** 

वश्रस्मार्यस्वर्गिवानो मुज्तार्ग्यन्ति वितिन्तम् द्वंपवाद्यवन्ति ह दातां।हात्श्यस्ति स्प्रसपानानित्वर गायुद्दाता। तिशक्ति प्रविषस्ताञ्च हाना। त्नानि धनानि द्धानीति त्न धालमास स्वरेगा इन्तपद्येक्षानि स्वरेगा बानी दाता।। तम पाः पित्वा दर्जे दोत्तात्व स्विति ब्रव पाविसाहिष या शास्त्र मन्ते पमः उत्यंविद्वश्वानां दिख्या निमहद्शित्ते मन्तद्ता प्रीत्ते पे श्रीमभ्द्वानी विश्वमार्थ मार्थपात् १८ १३।।शाकायः।।। ।।१००८। माधिमा सिसत्ते पक्षे वत् द्रखाशानिया। = अन्यसिविष्ठस्रवामर्वस्र स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्